मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक १३३ मई-२०१८

श्री नरनारायणदेव का

चंदन द्वारा अलंकृत दर्शन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में बालिका मंडल की शिबिर में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती लडकियाँ। (२) मोटप मंदिर के १०५ वाँ वार्षिकोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (३) गामडी श्री स्वामिनारयण मंदिर (बहनो) में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) जीरागढ रामजी मंदिरकी प्रतिष्ठा अवसर के सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (५) उनावा (गाँधीनगर) मंदिर के ३५ वे वार्षिकोत्सव अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करते यजमान परिवार।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १२ ● अंक : १३३

मई-२०१८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३	“स्वाभाविक चेष्टा”	०६
०४.	ब्राह्ममुहूर्तमें चिन्तन	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अमृत वचन	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०७.	सत्संग बालवाटिका	१७
०८.	भक्ति सुधा	१९
०९.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

“ ज ा `

सत्संगी सत्संग से छुटने वाला होता है तो उसमें अश्रद्धा की वृद्धि होने लगती है। उसे सर्व प्रथम क्रमश: सत्संग मात्र से अवगुण आने लगता है। वह स्वयं की हृदय में यह समझता है कि ‘सभी सत्संगी ना समझ है और मैं समझदार हूँ’ सब मिलकर वह अपने को सबसे समझदार मानता है और रात-दिन अनपे में रत रहता है तथा दिवस दरम्यान कही सुख से बैठता नहीं है और रात में सोते वक्त नीदं भी नही आती है। और क्रोधतो कभी कम ही नहीं होता है तथा अर्धजले लकडी की तरह धधकता रहता है । इसके व्यवहार से पता चल जाता है कि यह सत्संग से विमुख हुआ है। ऐसा होता है वह जितने दिन सत्संग में रहता है फिर भी उसके हृदय में किसी दिन सुख नही मिलता है और वह विमुख हो जाता है । और सत्संग में जिसकी वृद्धि होनी होती है उसमें सुख भाव पैदा होता है उसको प्रतिदिन मात्र हृदय में गुण आता है और सभी हरिभक्तो को श्रेष्ठ समझता है तथा अपने को लघु समझकर आठ पहर उसके हृदय में सत्संग का आनंद बना रहता है । ऐसे लक्षण जब हो तो समझना चाहिए कि शुभ वृत्तियों का विकास हो रहा है । और जैसे-जैसे अधिक सत्संग करता है वैसे वैसे समभावी होता जाता है तथा अतिशय उत्कृष्ठता को प्राप्त करता है।‘’’(प्र.प्र. २८)

अद्‌भूत और अलौकिक बात है । स्वयं को लघु बनाना और हरिभक्त मात्र के गुणो को हृदय में धारण करना।अपने को आठ प्रहर आनंद ही आनंद रहेगा।

अक्षय तृतिया से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को सुदंर चंदन और सुखड के अलौकिक दर्शन का यह महीना है। प्रत्येक बड़े मंदिर में भी चंदन के दर्शन होता है। ऐसा दर्शन करने से हृदय में शीतलता रहती है।

अब अधिक ज्येष्ठ मास प्रारम्भ है। अपने कालुपुर मंदिर में वर्ष भर उत्सव-पाटोत्सव तिथि के प्रमाण मे धामधूम से मनाया जायेगा।अपने को श्रीहरि ने अधिक मास में अधिक भजन करने का समय दिये है। इसलिए सभी भक्त भजन-कीर्तन, कथा, वार्ता भगवान के लीला चरित्र आदि विशेषरुप से करिएगा जिस कारण ये अधिक मास अधिक पुण्यदाक हो।अपना बैलेन्स भी बढेगा।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१८)

४ से ७ श्री स्वामिनारायण मंदिर (पुरुषोका) बलदिया (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर जूना जिंजुवा (पंचमहाल) उद्घाटन के अवसर पर आगमन। वहाँ से लुणावाडा आगमन।
सायंकाल श्री श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राज.) आगमन।

१० वाली (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) प्रतिष्ठा मुहूर्त स्वयं के हाथो द्वारा पूर्ण हुआ । देवडा (राज.) गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रतिष्ठा मुहूर्त स्वयं के हाथो द्वारा सम्पन्न।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जूना घाटीला (ता. हलवद मूली देश) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन । वहाँ से खाखरेची (मूलीदेश) (बहनो का) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर रवापर (कच्छ) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंदनपुर (कच्छ) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१७-१८ प्रयाग (यु.पी.) श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा नव निर्मित निर्भयपट्टी (जि. प्रतापगढ उ.प्र.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु आगमन।

१९-२० श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी को षोडशोपार अभिषेक स्वयं के कर कमलो द्वारा करके नांदोल (दहेगाम) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर बलदाणा (ता. लिम्बडी मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप पाटोत्सव पर आगमन।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर आधोई वागड कच्छ मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु आगमन। जीरागढ (हालार मूली देश) श्री रामजी मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (खाखरिया) विशेष मुहूर्त के अवसर पर आगमन।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा पाटोत्सव के बेला पर आगमन।

“स्वाभाविक चेष्टा”

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु स्वधाम आने गे बाद वडताल में एक दिन के आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज, आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज, सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामी सद्‌गुरु नित्यानंद स्वामी आदि सभा खंड में उपस्थित थे । तभी सदगुरु गोपालानंद स्वामीने सद्‌गुरु नित्यानंद से बात की कि अपनी इच्छा होती है तो कथा-वार्ता का नियम बनाते है । क्योंकि पूर्ण पुरुषोत्तम सहजानंद स्वामी अपने ईष्टदेव जब मानव स्वरुप में प्रगट हुए थे । तब उनकी ईच्छानुसार सुबह दोपहर, शायं, अर्धरात्रि सभी संतो को बुलाकर सत्संग करते थे । जब तो हम लोगो को बुलाकर कथा वार्ता करना नही है । इसलिए जो हम नियम बनायेगे तो मुक्त मुमुक्षु विषयी खुश होकर कथा वार्ता करेगे तथा वृध्धि प्राप्त होगी । इस तरह करना, तभी आचार्य महाराजश्री तथा नित्यानंद स्वामी आदि संतोने अनुमति दी उसी दिन से गोपालानंद के आसन से परम चैतन्यानंद स्वामीने वचनामृत की पुस्तक लाकर कथा सुनाये । उससे सभी को कथावार्ता का अधिक आनंद मिला और श्रीपति (घीर हो गये उनके अलावा किसी की उठने की ईच्छा नहीं हुई । एकबार गोपालानंद स्वामीने परमचैतन्यानंद स्वामी से पूछे कि, स्वामी इस वचनामृत का रहस्य समझ में नहीं आया कृपया समझाये । बाद में गोपालानंद स्वामी ज्ञानवार्ता करके वचनामृत का रहस्य समझाये । यह सुनकर सभी लोग अत्यंत आनंदित हुए तथा कथा की समाप्ति के बाद सद्‌गुरु नित्यानंद स्वामी कहे कि जो आप एक बार कथा करते है । ऐसी कथा वार्ता दो बार करें ।मैं सुनने आऊँगा । इस तरह कथा का लगातार अखाडा बनता गया और आचार्य महाराजश्री त्यागी-गृहस्थ सभी को महाराज की सभा में आनंद आने लगा । तब एकबार सद्‌गुरु नित्यानदं स्वामीने सभा में आचार्यश्री, सद्‌गुरुओने विनय किया कि अपने सत्संग में अब पाँच बार कथा-वार्ता का नियम बनाये जिससे ज्यादे लोग जुडेगे तथा आगे मनुष्यो को कथा वार्ता के माध्यम से अनन्त श्रेय मिलेगा अन्ततः अक्षरधाम प्राप्त होगा ।

उसी समय सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामीने प्रेमानंद स्वामी को बुलाये और कहे कि आप श्रीजीमहाराज के दैनिक क्रिया समस्त लीला चरित्र तथा स्वभाविक चेष्टा आपने अच्छी तरह से देखे हैं । प्रातः से शाम तक लीला के अखंड गवाह है । तथा आप उत्तम कक्षा की प्रेम से युक्त कवित्व शक्ति वाले है । इसलिए श्रीजी महाराज का पल-पल की लीला एवम् चरित्र को पदो में रचिए कहके लाये । तथा सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी ने भी कहा है कि आप भी प्रतिदिन स्मरण करने योग्य पदावली तैयार करके लाये । तब सद्‌गुरु लोग अपनी रचना लेकर आचार्य महाराजश्री और गोपालानंद स्वामी और नित्यानंद ने प्रदान किये । और बोले की इन रचनाओ में जो कुछ सुधार करना है तो आप अवश्य करियेगा ।

सम्प्रदाय की वार्ता ग्रन्थ सहजानंद चरित्र पुस्तक में प्रमाण है कि ‘उस समय आचार्य महाराजश्री तथा गोपालानंद स्वामी प्रेमानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी और ब्रह्मानंद स्वामी की रचनाओ में सुधार करके कई अति महत्वपूर्ण रचनाओ का चयन किये । जो (१) प्रथम श्रीहरि रे चरणे शीश नमावुं नौतम लीला रे.... दश पद (२) वंदु सहजानंद रसरुप अनुपम सार ने रे लोल के - आठ पद (३) आज मारे ओरडे रे आव्या अविनाशी अलबेलना के - चार पद (४) ओर आवो श्याम स्नेही सुंदर बर जोउ वाला का - एक पद (५) हवे मारा वाला ने नही रे विसारु रे (६) रे स्याम तमे साचुं नाणुं, अक्षरना वासी वालो आव्या अवनि पर, गइती - गइती भरवा रे नीर.... इस तरह श्रीजी महाराजकी स्वभाविक चेष्ठाये तथा मूर्ति वर्णन सहित रचनाओ को चयनित करके गोपालनंद स्वामीने कहा कि श्रीजी महाराज के चरित्र की

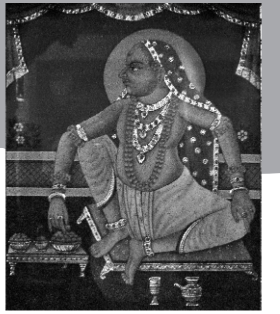

रचनायों को सभी लोगो को कंठस्थ कराये और पिछली रात्रि की कथा हो जाने के बाद निरन्तर रात्रि में बोलने के बाद शयन करना ऐसा सभी संतो को नियम रखना है । यह पद बोलने का नियम बड़े मंदिर में हो या हरिमंदिर में रहे तो भी स्वभाविक चेष्ठा के पदो को बोले विना शयन नही करना है । तथा ये रचनाये समस्त सत्संगियो को सिखाने से जिससे रात्रि में श्रीजी महाराज के चरीत्रो का गायन और सुनने का लाभ मिले । इस तरह से सभी संतो तथा हरिभक्तो को चार वेद, छ शास्त्र, अठ्ठारह पुराण भारत का इतिहास इत्यादि सुनकर फलिभुत होता है । जो संत या हरिभक्त नित्य नियम से लीला चेष्ठा पद को गायेगा उसमें सत्संग रहेगा तथा सज्जनता बनी रहेगी । उसी तरह पंच वर्तमान भी रहेगा । यदि कोई शिखर बद्ध बड़ा मंदिर हो या छोटे चित्र वाला हरिमंदिर हो या योगानुकुल घर दूर पर हो तो उस मंदिर में बैठकर रात्रि में नित्य नियम चेष्ठा के पद गाने-सुनने के बाद शयन करना चाहिए । जो किसी मंडल के अथवा या किसी परिवार में स्वभाविक चेष्ठा के पद गायेगा उसकी वशावली में परम्परा सत्संग की रहेगी और सज्जनता रहेगी । जहाँ पर नियम के पद गाये जात् है तो उस स्थान पर श्रीजी महाराज सदैव प्रगट रहते है।

इसी प्रकार संतो के लिए पाँच बार की कथा का प्रबन्धकिये और संत हरिभक्तो के लिए नियम चेष्ठा के पदो को सिखने के लिए विधेयक लिख कर देते थे । जिसे दोनो देश में गाँव-गाँव में पहुंचाया गया ।

सद्गुरु गोपालानंद स्वामी द्वारा बनाये ये नित्य-नियम सत्संग में मंदिरो में धरोहर माना गया है । स्वामी के वचन का प्रभाव आज भी दिखाई देता है । जो त्यागी के मंडल में या मंदिर में या घर में एकव्यक्ति भी नित्य नियम कहता है वहाँ पर नियम निश्चय पक्षवालो का एकान्तिक सत्संग दिखाई देता है और जहाँ पर यह नियम भूल-चुके है वे मंदिर केवल कहने योग्य हो गये है । और ऐसे परिवार वहाँ पर त्यागी का मंडल वहाँ मात्र कहने के लिये है यह सुविधायोगी सत्संग आने वाले एक दो पीढी के बाद सत्संग शून्य हो जाय ऐसी सम्भावना होती है ।

इसी प्रकार एक समय मुक्तानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी को ब्रह्मानंद स्वामी बोले कि महाराज ! आप हमें कौन सा नियम दे रहे है ।'' तब श्रीजी महाराज बोले जो, हमने जहाँ-जहाँ पर लीला किया है, जिस-जिस गाँव में समैया किये है उसे आप को सम्भालना है'' तत्पश्चात राजबाई को जीवुबाई को गंगा माँ अंत में बैठे बोली दूसरी बाइयो ने जो हमसे नियम ग्रहण की है तो आप हमें क्या नियम दे रहे है । तभी महाराज बोले आप को भी यदी नियम कि हमने जिस-जिस गाँव में समैया किये है उसे सुनकर ही आराम करना । श्रीजी महाराज के इस नियमो के अनुसंधान में श्रीहरि स्वधाम गमन बाद गोपालानंद स्वामीने नित्य लीला चेष्ठा के पदो की रचना कराके सत्संग में बाई-भाई, त्यागी एवम् गृहस्थ सबके लिए आचार्य महाराज की आज्ञा से दिये है । जो पूरे विश्व में गाँव के एक हरिभक्त का घर हो वहाँ पर भी ''प्रथम श्रीहरि ने रे.... गाया जाता है । पूरे परिवार में से एक ही सदस्य भी नित्य नियम गाता रहेगा तो भी परिवार में सत्संग रहेगा ऐसा बड़ा प्रताप है । नित्य नियम चेष्ठा के पद सभी वेदो उपनिषदो को सारते है की फिर भी सम्प्रदाय के संस्कृत-प्राकृत शास्त्रो को भी सार रुप दिये है ।

वचनामृत गढडा मध्य-४८ में साधु प्रेमानंद स्वामी भगवान के ध्यान में अंग का गर्व जो ''वंदु सहजानंद रस रुप अनुपम चार ने रे लोल'' ये गा रहे थे । जब गा रहे ये तभी श्रीजी महाराज बोले, कि अती सुंदर कीर्तन किये । यह कीर्तन सुनकर हमारे मन में ऐसा विचार आया इसी प्रकार इन्होने भगवान की मूर्ति का चित्रवत वर्णन है । इस लिए इस साधु का उठकर साष्टांग दण्डवत और प्रणाम करना चाहिए, और इसी प्रकार भगवान का अन्तकरण में चिंतन होता हो तो ऐसी वासना युक्त देह जो त्यागे, तो उसे पुनः गर्भ में निवास नही करना पडे । तथा इसी प्रकार भगवान की चिंतन करते हुए जीवित रहे तो भी परमपद को प्राप्त होगे और जिसे भगवान के स्वरुप का इस प्रकार चिंतन करे तो कृतार्थ हो जायेगे । उसे कुछ करने के लिए बचता ही नही है ।

श्रीहरि की स्वभाविक चेष्ठा ध्यान के अंग का कीर्तन गाने वाले हरिभक्त के उपर कैसी कृपा है तो इस बचन को प्रमाण मान लेना । नियम बनाये, नियम बोले बिना सोना नही, सभी नियम चेष्ठा गाने की श्रध्धा शक्ति न हो तो भी प्रथम श्रीहरिने रे अने वंदू सहजानंद के पद को अवश्य स्मरण करना चाहिए ।

ब्राह्ममुहूर्तमें चिन्तन

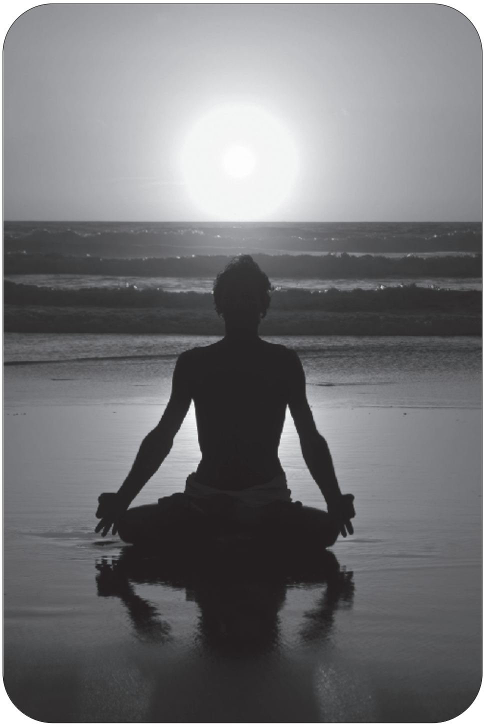

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

ब्राहमेमुहूर्ते शयनं विहाय निजस्वरुपं हरि चिन्तयित्वा ।
स्नातं विशउद्धं प्रचुराभिरद्भिः श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि १
श्वेतं च सूक्ष्ं परिधाय वासः सितं द्विवितीयं वसनं वसित्वा ।
चतुष्कपीठाद्द्धृतमुतरन्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि २
आशूपविश्यामलनैजपीठे विधायसन्नैष्ठिककर्म नित्यम् ।
नारायणं मालिकया स्मरन्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ३
सुगन्धिना केसरचन्दनेन सन्मल्लिकाचम्पकपुष्पहारैः ।
सम्पूज्यमानं निजभक्तवर्यैः श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ४
कर्णे दधानं कुसुमावतंसं शिरः पटे कौसुमशेखरालिम् ।
कण्ठे च नानाविधपुष्पहारान् श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ५
भक्ष्यैश्च भोज्यैः सह लेहयचोष्यैर्द्दृष्ट्वा पुरो भोजनभाजनं च ।
पूरीमदन्तं च ससूपभक्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ६
भक्तैरनेकैर्मुनिभिर्गृस्थैर्वृतं सभायां भगणैरिवेन्दुम् ।
सहासवक्त्राम्बुजचारुनेत्रं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ७
निः सीमकारुण्यसुधामयेन विलोकमनेनातिमुदा स्वभक्तम् ।
बद्घांजलिं दीनमवेक्षमाणं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ८
श्रीनारायणमातमानुषतनुं भूमौ कृपासागरम् ।
भक्तैश्चन्दनपुष्पहारनिकरैः संपूज्यमानं निजैः ॥
पीठस्थं तुलसीस्त्रजं च दघतं दक्षे करे सुन्दरम् ।
स्मेरास्यं सितसूक्ष्मवाससमहं श्रीनीलकंठं भजे ९

भगवान श्री स्वामिनारायण के साथ जो प्रकांड विद्वान पंडित सभा मे उपस्थित रहते थे उसमें से सर्वश्रेष्ठ विद्वान संस्कृत भाषा के पंडित दीनानाथजी भट्ट थे । कहा जाता है कि उन्हे संस्कृत शास्त्र के अट्ठारह हजार श्लोक कंठस्थ थे । जिसका मुख पाठ कभी भी कर सकते थे । वे स्वयं की भावना-भक्ति को श्रद्धा को करते हुए कई श्लोक और ग्रन्थो की रचना की है । जिससे उनकी विद्धवता झलकती है । उसमें से एक स्त्रोत अष्टक है जिसमें उन्होने ब्रह्म मुहूर्त में उठकर (अर्थातभोर के चार बजे) भगवान के किस स्वरुप का चिन्तन करना चाहिए उस स्वरुप का वर्णन करके स्वरुप का दर्शन कराये है ।

ब्राहमेमुहूर्ते शयनं विहाय निजस्वरुपं हरि चिन्तयित्वा ।
स्नातं विशउद्धं प्रचुराभिरद्भिः श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि १

ब्रह्म मुहूर्त अर्थात् स्वयं के स्वरुप का चिन्तन करने का समय प्रातः काल भोर से चार बजे से प्रारम्भ होता है । तब रात्रि के नींद का त्याग करके प्रथम अपने हृदय में स्वयं के स्वरुप जो अनंत कोटि ब्रह्मांड के नियंता और उत्पत्तिलय के कर्ता, अन्तर्यामी सर्वोपरि, सर्व अवतारो के अवतारी ऐसे स्वयं के स्वरुप का हृदय में चिंतन अर्थात् प्रातः की मानसिक प्रार्थना करके तत्पश्चात शुद्ध और पवित्र स्वच्छ अधिक जल से स्नान क्रिया कर रहे है । और वर्णी जैसा वेश धारण करके जिसने अति कठिन तपस्या किया है ऐशा तप शिवजी के सिवाय कोई नही कर सकता है । ऐसे तप का आचरण किये है । इसी कारण से मार्कन्डेय महामुनि जिसका नाम नीलकंठ रखे है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ । (१)

श्वेतं च सूक्ष्मं परिधाय वासः सितं द्वितीयं वसनं वसित्वा ।
चतुष्कपीठादुद्धृतमुत्तरन्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि २

प्रातः काल में स्नान विधिकर के पवित्र श्वेत और सूक्ष्म अर्थात् महीने धोती पहनकर तथा उसके उपर एकदम शांत-शीतल स्वेत रेशम जैसा सफेद सुंदर वस्त्र खेश औढकर स्नान करने वाले पीढे से तुरंत उठकर पूजा करने के लिए पवित पूजा स्थल पर जा रहे है । वर्णी जैसा वेश धारण करके अति प्रचंड जिसने तपस्या किये है । ऐसी तपस्या शिव के अलावा किसीने नही किया है । ऐसे तप का आचरण किए इसी कारण से मार्कन्डेय महामुनि जिसका नाम नीलकंठ रखे है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(२)

आशूपविश्यामलनैजपीठे विधायसन्नैष्ठिककर्म नित्यम् ।
नारायणं मालिकया स्मरन्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ३

अति पवित्र होने के कारण आसन के उपर बैठकर कभी भी भगवान कीप ूजा के अलावा किसी भी प्रकार का कार्य जो संसार सम्बंधी हो वैसी भी बात नही करते है । इस कारण से माया के मैल से रहित स्वच्छ होकर अपने आसन पर बैठ कर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत धारियो को प्रतिदिन करना होता ही है यह अनिवार्य रुप से करना ही होता है । वे कर्म नित्य प्रात पूजा करते है और दाहिने हाथ में तुलसी से बनी माला लेकर छः अक्षर वाला महामंत्र का जप करते ऐसे वर्णी जैसा परिधान धारण करके अति प्रचंड जिसने तपस्या ही है । जो तप भगवान शिवजी अलावा कोई न सर सके इस कारण से मार्कन्डेय महामुनि जिसाक नाम नीलकंठ रखे है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मै अपने हृदय में चिंतन करता हूँ ।(३)

सुगन्धिना केसरचन्दनेन सन्मल्लिकाचम्पकपुष्पहारैः ।
सम्पूज्यमानं निजभक्तवर्यैः श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ४

मन को प्रिय और आनंद दे ऐसे अच्छे सुंगधसे पूर्ण श्वेत मलयगीरी वाला चंदन धिसकर उसमें कश्मीरी सुगन्धित केसर का मिश्रणक रके चरण में और सिर पर लेप प्रेमी भक्तजनो द्‌ारा किया गया है । और गले में दिखने वाला सुंदर और सुगन्धित पुष्प-चमेली और चम्पा के फूलो का हार धारण करके और शांत से पूजा किये है । ऐशी वर्णी जैसा परिधान धारण करके अत्यन्त कठोर तपस्या जिसने किया है जो तपस्या शिवजी के अलावा कोई नही कर सकते है ऐसे तप को करन वाले को जिसका मार्कन्डेय महामुनिने नीलकंठ रखे है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(४)

कर्णे दधानं कुसुमावतंसं शिरः पटे कौसुमशेखरालिम् ।
कण्ठे च नानाविधपुष्पहारान् श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ५

उनके अपने प्रेमी भक्त लोग उनके कानो में सुंदर पुष्पो का तोरण लगाये है । और सिर पर सुशोभित नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पो से युक्त छडी दिये है । और लम्बी गरदन में नाना प्रकार के पुष्पो जो विविधरंग के है फूलो का हार पहनाये है । ऐसे वर्णी जैसा परिधान धारण करके जिसने अति कटोर तपस्या किये ऐसा तप शिवजी के सिलाय किसीने नहीं किया है, एसी तपस्या का पालन करने वाले को मार्कन्डेय महामुनि के नाम नीलकंठ रखा है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(५)

भक्ष्यैश्च भोज्यैः सह लेहयचोष्यैर्दृष्ट्वा पुरो भोजनभाजनं च ।
पूरीमदन्तं च ससूपभक्तं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ६

देश के बाहर से आये लोगो का समुदाय श्रीहरि की पूजा करने के बाद स्वयं के देश से लाये हुए अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ जो चार प्रकार के है कुछ खाने वाले है फल तथा पकाये मिष्टान और भोजन इत्यादि प्रवाही अर्थात् जिसका पान किया जा सके ऐसे आम का रस, नारीयल का पानी शरबत चूस कर खा सके ऐसे आम, नीबू, जामुन इत्‌ादि इस प्रकार चार प्रकार का भोजन देखकर फुली हुई सफेद पूरी खाते है तथा दाल-भात मिलाकर खाते है । ऐसे वर्णी जैसा परिधान पहनकर कठोर तपस्या जिसने किया ऐसी तपस्या भगवान शिवजी के सिवाय कोई नही किया हो । इस कारण से मार्कन्डेय

महामुनि जिसका नाम नीलकंठ रखा है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(६)

भक्तैरनेकैर्मुनिभिर्गृस्थैर्वृतं सभायां भगणैरिवेन्दुम् ।

सहासवक्त्राम्बुजचारुनेत्रं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ७

हजारो भक्तो ने मनमोहक स्वादिष्ट भोजन कराने के पश्चात ये भक्त और मुनियो परमहंसो की विशाल सभा में जैसे आकाश में तारे दिखाई देते है उसी मुखारविंद पर करुणा के सागर जैसे श्रेष्ठ नेत्रो द्वारा देख कर भक्तो को सुख देने वाले वर्णी भेष दारण करके जिसने अति कटोर तपस्या किये हो ऐसी तपस्या भगवान शिवजी के अलावा कोई भी न कर सके ऐसे तपस्या का आचरण करने के कारण मार्कन्डेय महामुनि ने इनका नाम नीलकंठ रखे है । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(७)

निः सीमकारुण्यसुधामयेन विलोकमनेनातिमुदा स्वभक्तम् ।

बद्धांजलिं दीनमवेक्षमाणं श्रीनीलकंठ हृदि चिन्तयामि ८

संसार के जीवो के उपर जिनकी दया और करुणा की कोई सीमा नहीं है और अमृतमय करुणा के सागर जैसी दृष्टि से स्वयं के भक्तो को देखकर आनंद देने वाले । तथा अत्यंत गरीब दीन - हीन व्यक्तियो को अपने सामने हाथ जोडे खडे देखकर दया करने वाले तथा वर्णी जैसा वेश धारण करके जिसने कठोर तपस्या की हो ऐसी तपस्या भगवान शिवजी के सिवाय कोई नहीं कर सकता है ऐसे तपस्या का आचरण करने के कारण मार्कन्डेय महामुनि ने उन्हे नीलकंठ नाम दिये थे । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(८)

श्रीनारायणमातमानुषतनुं भूमौ कृपासागरम् ।

भक्तैश्चन्दनपुष्पहारनिकरैः संपूज्यमानं निजैः ॥

पीठस्थं तुलसीस्त्रजं च दधतं दक्षे करे सुन्दरम् ।

स्मेरास्यं सितसूक्ष्मवाससमहं श्रीनीलकंठं भजे ९

स्वयं के भक्तो द्वारा सुंदर चंदन पुष्प के हार के गुच्छे से जिससे अच्छे प्रकार से पूजा किये है । ऐसे ये सहजानंद स्वामी साक्षात परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री पुरुषोत्तमनारायण ने स्वयं मनुष्य रुपी शरीर धारण करके पृत्वी पर सभी के उपर कृपा किये है । प्रत्यक्ष स्वयं के देवो योगियो और सिद्धो को भी दुर्लभ दर्शन देते है ये उनकी करुणा का ही कारण है । उच्च पीठ स्थान पर बिराजित होकर हाथ में सुंदर तुलसी की दाहिनी हाथ में माला धारण किये अति कठोर तपस्या जिसने किया है ऐसी तपस्या भगवान शिव के सिवाय कोई नही कर सकता है । ऐसी तपस्या को करने के कारण मार्कन्डेय महामुनि ने इनका नाम नीलकंठ रहे थे । ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य स्वरुप को मैं अपने हृदय में चिन्तन करता हूँ ।(९)

निःशुल्क शिक्षा लाभहेतु कक्षा-९ में प्रवेश की सूचना

परमपूज्य धर्मधुरंधर १००८ श्री आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धाम संचालित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय (पाठशाला) में कक्षा ९ से एम.ए. (आचार्य) तक शिक्षण ।

गुजरात सरकार मान्य श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय - वेरावल मान्य निवासी विद्यालय छात्रावास की सुविधा भोजन की सुविधा, निशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है । इस में आगामी वर्ष-२०१८ जून से कक्षा ९ में प्रवेश की प्रक्रिया १ मई से ३० मई तक रखी गयी है । कक्षा ९ पास अंकतालिका के साथ निम्न पते पर सम्पर्क करें । गुजरात तथा बाहर प्रान्त के सरकार मान्य ८ वीं पास होना चाहिए ।(मात्र ब्राह्मण विद्यार्थइयो के लिए)

सम्पर्क : ९५२५३४७६९६ - प्रधानाध्यापक

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय अक्षर फुलवाडी, जेतलपुरधाम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अमृत वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २३-२-२०१८ को मैने दुकान बंद कर दिया । काफी युवक मोबाईल में रिकार्डिंग चालु रखते है और बंद करके चालू रखते है । कष्ट नही, हम विरोधनही करते है । लेकिन इतना याद रखियेगा कि मोबाईल में ध्यान देने से अच्छा हृदय में उतारिये अच्छा है ।

हम सब भाग्यशाली है बुजुर्गोने जो परम्परा दी है उसे आप इस विस्तार में बचाकर रखे है । जिससे सभी को सत्संग का सुख मिलता है और उसका पोषण करने के लिए ये मंदिर, भगवान, शास्त्र, संतो एवम् हरिभक्तहै ।(धर्मवंशी आचार्य है वे हमें जान लेना चाहिए) दूसरी जगह पर ऐशा है क्या ? नजर दौडाकर देखे संसार में मनुष्य कितना दुःखी है । मनुष्य का कोई कार्य पूर्ण होता है तो श्रद्धा होती है । इसके अलावा क्षमता आती ही नही है । लेकिन इसके बाद क्या करना । वहाँ जाकर ज्ञान होना बहुत कठिन है । जाकर कहाँ खडे रहे । अर्थात् सामने से रास्ते देखने वाले सलाह - सूचन की झडी लगा देगे कि आप यह मंत्र बोले आप बोलते है वह गलत है । ऐसे नही वैसा करिए । कोई बताये गा सीदे सिर रखो, कोई कहेगा सिर घुमाओ, कोई सिर मुंडन के लिए कहेगा, कोई कहेगा बाल बड़ा करो, कोई कहेगा दाढी बडी करो कोई कहेगा दाढी बनाओ, लाल अंगूठी तो कोई पीली अंगूठी पहनिये, कालाधागा बाँधिये हरा धागा बाँधे अपने को क्या मिला है आप को ज्ञात है ? हमलोगो को जो भगवानने पहनाया है वही पहनते है, कंठी अन्तर में भगवान पिरोये गये है ? ये स्पष्ट हकीकत है ।

महाराज की प्रसादी का एक सच्चा धागा भी मिल जाय तो लोग अपने को भाग्यशाली समझते है ? हम म्युजियम में दर्शन करेगे तो हमें ज्ञात होगा । अपने पास क्या नही है ? इस विस्तार में कितनी मंदिर बने । आप को ज्ञात है आप लोग काठियावाड से गाँव छोडकर यहाँ आये । कभी आप भगवान से वंचित न रहो वे हमारी जिम्मेदारी है । झालावाड, काठियावाड, उत्तर गुजरात, कच्छ, मध्य-प्रदेश, राजस्थान या विश्व के किसी कोने मे भक्त हो और अपने पास महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के संत भी है । आप कही भी जाइये वहाँ पर भगवान और संत का मिलाप होना ही चाहिए । यह ध्यान रखना हमारा कर्तव्य है । जबरन या गला दबाकर सत्संग नहीं करवाना है । व्यवस्था प्राप्त हो ये हमारी जिम्म्दारी है । इस लिये ये मंदिर होते है । आप ने तन, मन, धन से सेवा देते है । ये मंदिर और भगवान अपने है ऐसा विश्वास रखकर मंदिर के सीढीयो पर पैर रखना चाहिए । जानकर मानकर नही मानना उधार स्वरुप

है। हम कहे ऐसा मान ले या महाराजजी कहे सत्य है। यह नही मान लेना उसे जान लेना आवश्यक है।

मुक्तानंद स्वामी द्वारा रचित पद हम लोग प्रतिदिन गाते है। रे ब्रह्मा से कीट तक देखा। जूख सुधजानीने वगोत्थु। मुक्तानंद मन तम संग मोह्युं... रे श्याम तमे साचु नाणुं. लडके गाओ, नही गाते होतो गाने को प्रेरित करें। बडे लोग गाते है। शेष आरती और चेष्ठा का समय हो तो भोजन का समय हो गया ऐसा नही करना चाहिए। पूरा सांख्य शास्त्र पढिये बाद में मुक्तानंद की दो कडी पढिये। **Finish !** समझ में आये तो ! ब्रह्मा अर्थात् बड़े-बड़े लोक के देवता से लेकर कीटक, कीट अर्थात सूक्ष्म यह एक रुपक है। संसार में बहुत देखा है। यह पंक्ति किराये पर नहीं मिलती है। कलम लेकर बैठना तथा भूल से शब्दो का मेल करे तो लिख नही सकते है। ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी विशेष संतो का ही नाम ले रहा हूँ। आप इनके भजन देखे। हमारे पास गद्य और पद्य में इतना साहित्य है कि संसार में किसी के पास नहीं है। सभी शास्त्र पढे ता ज्ञानी हो जाये ऐसा नहीं है। इन संतोने जो लिखा है उसकी एक पंक्ति या वाक्य जीवन में आत्मसात करले तो इससे अधिक कुछ करना ही नही है। भगवान में से मन पीछे नही आये। पंक्ति अनुभव करके लिखी गई है। ऐसा नही ऐसा कर के नही संतोष करें।

मुक्तानंद स्वामी रामानंद स्वामी के शिष्यो में बडे संत थे। आप कल्पना कर सकते है ? आप के बड़े आप से छोटे को सम्मान देने की बात करे तो हिचकिचाहट होगी। रामानंद स्वामी के कई शिष्य थे। मुक्तानंद के चेहरे पर चमक थी। शास्त्रो के ज्ञाता थे। तो भी रामानंद स्वामी सहजानंद स्वामी से बोले आप सम्प्रदाय सम्भाले। तभी रघुनाथदास बाहर आये। पेट में दर्द आया, कि मैं अधिक जानता हूं। ऐसे एक दो के नाम लिखे है। लेकिन जो मुक्तानंदजीने लिखा वह भगावन को देखकर लिखा है। बड़े बड़े राजा ब्रह्मानंद स्वामी से कहते थे, कि मेरे लिए २ छंड, २ पंक्ति लिख दीजिए। तब ब्रह्मानंद स्वामी कहे जिस मुख से शक्कर, लड्डू और खीर खा चुके है। अब कोयला का स्वाद कैसे ग्रहण करें। क्योकि किसी के लिए लिखना ही पडता है। जब की यहाँ तो महाराज सामने बिराजते है और नंद संतो महाराज की तरफ देखते है तो लिख जाता है। इसके लिए मजदूरी नही की है। इतिहास जानते है, ब्रह्मानंद स्वामी झोके खा रहे थे। हम वचनामृत में पढ़ते है। महाराज आधीरात को साधुओ की जगह पर आजाते थे। संतो को जगाते थे। रात्रि के मध्य प्रहर में आकर प्रश्न पूछे, बच्चो क्या होगा ? एक तो फोन चालू हो, वाट्स अप अथवा फेस बुक में व्यस्थ होते है। लेकिन ये नंद संत है। ये लोग एक एक भगवान के रुप में पूजे जाय ऐसे है। महाराजने कितने प्रकरण बदले ! इतने हाथ का कंतान वाले कपडा पहनिये ! टी शर्ट नहीं। हम हाथ में फिजिकल यंत्र बांधते है। जब कि महाराजजीने संतो के गले में स्वभाव का यंत्र बधवाया। मीठा तथा तैलीय नही खाना। जो संत महाराज के द्रशन बगैर नही रह सकते। विना हमारी आज्ञा के दर्शन हेतु नही आईए। जाईए गाँव में धुमिए तथा किसी का विरोधमत करिए। अपने जैसा हो तो कैसा होगा। कहते ये कंठी भाई साहब वापस ले लीजिए। स्वभाविक चेष्ठा के पद पढना, सिखना पूरा नही तो किसी दिन समय मिले तो एक पद पढना। संतो ने क्या कहा है क्या देखा है। क्या अनुभव किये है। २०० कि.मी. की गति से गायेगे तो कभी समझ में नही आयेगा।

विषयान्तर करके महाराज के पूछा, आप को हमको छोडकर कही जानेका मन नही करता है। विचार भी नही आते ? उत्तर क्या मिला ? महाराज ! विचार तो कई आते है लेकिन आप जैसा भगवान मिले तो जाये। स्वभाव प्रकृति से भगवान के अलावा कोई नही। सत्य कहना, हकीकत बोलना, पारदर्शक बनने में भी ५६ की छाती चाहिए। हिम्मत पुरुषत्वहोना चाहिए। घमंडी होना सरल है। पारदर्शक होना कठिन ही नही अशक्य भी होता है। लेकिन ये नंद संत कभी भी भगवान के सामने दम्भ नही किये। आप से कोई पूछे, कितनी माला फेरते है ? तो उत्तर देते है पाँच तो करते ही है। लेकिनये पाँच वास्तव में

करते है कि नही ? पूरे दिन की योजना इसी पांच माला के मध्य बन जाती है। २ मिनट के लिए पारदर्शी बनिये, पूजा प्रारम्भ नहीं आज क्या करना मन में विचार आने लगते है ? आज का क्या हम, अपना अनुभव कहते है। आज थोडी देर ही गयी। सारी ! कच्छ गये थे, हलवद से मालिया कीडी गया फिर, कच्छ में गये । १ बजे अहमदाबाद आये। ऐसा प्रतिदिन का है। उठना ही देर से हुआ । मन में चिंता थी हरिभक्त राह देख रहे होगे । आपको सम्भालना हमारी जिम्मेदारी है । देश-सबेर मिले तब आप को छोडे। आप को हम छोडने वाले नहीं है। आप हमको छोडकर चले जाय यह अलग बात है।

माला की बात थी। महाराज सभा में पूछे कितनी माला फेरते है ? उत्तर मिला १०, ११, बगल वाला अपना कालर ऊचा करने के लिए २१ तो कहेगा ही। यह बढता जाता है । भगवान पूछे तो बाकी क्या रखा ? केवल बड़ी बड़ी बात करना है । दूसरे को दिखाने से क्या फायदा ? अर्थात् १०, २०, ५०, ५०० तक जा सकते है। भगवान तो अन्तर्यामी है। मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामीने जब उत्तर दिया तब बोले, महाराज तो केवल एक माला फेरते है। क्यो मेरु से माला फेरते हुए यदि बीच में भगवान के अलावा दूसार विचार आने पर माला निष्फल हो जाता है। आज एख मणका फेरे ये महत्वपूर्ण है, क्यो कि ज्ञात है दुनिया में भाग दौड अधिक हो गई है। आप साम्राज्य लेकर बैठे है तो सत्तरह प्रकार की आधी व्याधिउपाधियाँ होती है । चिंता तो भी डेढ मिनट भगवान को दीजिए। किसी चिंता बगैर दुकान पर ध्यान देना। क्योकि मार्च की समाप्ति है। यह नही कि सब कुछ छोडकर भगवान को थैंक यु बोलना। हम श्वास लेते है आप के आभारी है। हमारी क्या योग्यता थी कि हमें ये मकान गाडी मिले। हमारे पूर्वज खेतो की सिंचाई करते ये सही बात है न ? इन बड़ो से पूछो पहले क्या था। आज सब कुछ है। इसके पीछे भगवान का हाथ है। अपनी बुद्धि कमजोर है । क्योंकि बुद्धि से मेहनत हो सकती है। जब तक भगवान की कृपा न हो तब तक कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है।

इन संतो को देखकर हमें गर्व होता है। ये लोग देव के लिए कार्य कर सके। नहीं तो बाहर कई खंडिया राजा बन कर बैठे है। आप बाह रकी दुनिया को देखे। अपना विस्तार हो या कोई मंदिर हो संत लोग हमलोगो की देखभाल रहते है। चार दिन मंदिर न जायिए तो पूछेगे कहाँ थे। उनको क्या पडी है। संसार में कई साधु चिपिया बजाते है और कुछ पूछते है आप से ? इन संतो के उपर हमें गर्व है। कोई व्यक्तिगत संस्था लेकर नही बैठे है। दस्तावेज नरनारायणदेव का होता है । इससे भविष्य सुरक्षित रहेगा । भगवान को कोई सोना, रुपया, डायमंड, प्लेटिनम चढाते है इससे भगवान छोटे०बड़े नही हो जाते है। ऐश्वर्य नहीं बढ जाता है। भगवान जैसे है वैसे ही रहेगे। तुलसी पत्र से भी भगवान खुश रहते है।

बीते एकादशी को एक मीटींग के अनुसार लिखित ठराव अनुसार जो १२ संस्थाये स्वतंत्र रुप से संचालित होती थी । आगामी २ महीने में अपने अहमदाबाद मंदिर के ट्रस्ट में विलीनीकरण हो जायेगा। पिछले केवल २० दिन में अमेरिका से लेकर कच्छ, झालावाड और उत्तर गुजरात में १० नये मंदिर प्रतिष्ठित हुए है। जहाँ पर सत्संग एकदम नही होता था। ऐसे गाँवो के साथ पिछले १० वर्षो में ३०० नये मंदिर बने १३०० का विलिनीकरण देव ट्रस्ट के अन्तर्गत हुआ है। मात्र मंदिर ही नही काफी कुछ करते है। ये इस लिए कह रह है कई लोगो को आकडा का ज्ञान नही होता है। लोग कहते है हम कुछ करते नहीं है। अब पहले जैसा सत्संग नहीं रहा। पहले जैसा नहीं तो ये कैसे होता है यह अकेले से नहीं होता है । यह एक टीम वर्क है । आप को जो सूचना चाहिए मागिये आप को प्राप्त होगी।

अब समयानुकुल मंदिर में भी सुधार करे। आगे प्ले ग्राउन्ड रखिए। झूला और लपसनी भी रखे। दलान और बैंच रखे । बच्चे आयेगे । ठंड में धूप लेने वृद्ध आयेगे। भले गप्प करे। किसी दिन मंदिर में विरामजान

भगवान का दर्शन करने हेतु सीढीयाँ चढेगे । अहमदाबाद मंदिर में नट को खेल करने की आज्ञा महाराज जी क्यो दिये ? छोटे-छोटे गाँवो में समय के साथ सुधार हो रहा है । कई लोग कहेते है कि स्वामिनारायण संत लड्डू खाते है, जिसे खाना हो वह आये और मिलेगा । गाँव घूमना पडता है । बैठकर लड्डू नही खाते है । सम्बन्धहो तभी मिलता है । हरिभक्त लड्डू पूरा करते है । देव के लिए कार्य करते है । जो फालतू की दुकान खोलकर बैठे है लूट कर लड्डू खाते है । उनको भगवान (डॉक्टर के माध्यम से) आँत चीर कर लड्डू बाहर निकालते है । ५, ७, १०, वर्ष का इतिहास देखिए । आँख खोलकर टोपी पहनकर रहे उसे साधु नही कहते है । यह सत्य है । इस देव की सेवा फल देतीहै हमने नजर से देखा है । इस अहमदाबाद मंदिर के ब्र. राजु स्वामी मूली सभा में ३० सेकेन्ड पहले मेरे साथ थे । कोलेसट्राल, मेह में इत्यादि की तकलीफ थी । बोले २-५ मिनट में फ्रेश होकर कमरे में गये । कुर्सी पर बैठे । संत बोले नास्ता करेगे ? नही, आँख बंद मृत्यु हो गयी । ऐसे कई हरिभक्तो को जानता हूँ । पूजा, नास्ता करके बैठे और मरण पाये क्यो ? देव के होकर रहे इस लिये देव ने ध्यान दिया । बात ऐसी है कि हमारे नंद संत आनंदानंद स्वामी हो या निष्कुलानंद स्वामी या ब्रह्मानंद स्वामी कोई भी हो । एक एक संतो का इतिहास देखिए । खाना नही मिलता था । इस लिए यहाँ आये ऐसा नहीं । आनंदानंद स्वामी भरतपुर स्टेट के राजा थे । महाराज ने प्रकरण बदल दिया । चलिये किये तो मुक्तानंद स्वामी जैसे बडे संतोने उत्तर दिया, मन तो अधिक कहता है चले जाये । लेकिन पूरे ब्रह्मांड में जाकर देखा तो इनके सिवाय कोई भगवान दिखाई नहीं दिया । इस लिए छोडकर नही जा सकते है । ऐसे देव, संत, हरिभक्त (आचार्य) दूसरी जगह कही मिले तो तिलक चंदन मिटा देना । यह हमारा खुला चैलेन्ज है । दूसरे मिले तो कोई कष्ट नही सही बात न, यहाँ पर सुख शांति है शेष यहाँ देखो वहाँ उपाधिही है । सम्प्रदाय के नाम पर सत्संग के नाम पर उपाधिका झोला ही दिखाई देता है ।

प्रातः में जीम में जाता हूँ । कुछ समय के लिए दूरदर्शन चालू करके जोक्स के लिए देखता हूँ । एक चैनल में प्रतिदिन ६ नये साधु उपदेश देने आ जाते है । मन में ऐसा आता है कि इन्हे कोई उपदेश दे तो अच्छा है । आयुर्वेदिक दवाओ का वैद्य प्रचार करते है, कि दुबला होने के लिए, मोटा होने के लिए । एक दवा से सभी रोग मिट जायेगा । दैनिक समाचार पत्र में भी प्रचार आता है । मैं विशेष पढता नही हूँ । कभी हाथ में आ जाने के बाद थोडा पढ लेता हूँ । सभी रोगो का उपचार इस गोली से हो जायेगा । ये अच्छी बात है । ऐसा कल्पतरु वृक्ष भी नहीं कर सकता है । लोग बदमाश महात्मा और बदमाश वैद्यो के चक्कर में पड जाते है । हम सब भाग्यशाली है जो हमें प्राप्त हुआ है उससे अपनी कुंडली बदल गयी है । नही तो किसी कोने में गंदी जगह पर बैठकर, चड्डी पहनकर बीडी पीते होते । लेकिन भगवान मिले अर्थात् आनंद करते है । दूसरा व्यक्ति भी सुखी हो उसे जबरन ही लड्डू खिलाने के वास्ते लाईए । पेट में प्रसाद जायेगा तो किसी दिन अवश्य प्रभाव डालेगा । आप लोग सत्संग सेवा करते ही है उसमें कोई दो मत नही है लेकिन उत्तराधिकारी तो तैयार करना पडेगा । आप अपना बील बना लो, लेकिन सत्संग का बिल कौन करेगा । बच्चियाँ परिश्रम करती है । गाँव जाती है । गादीवाले अपने को समाचार देते है । सभी को आशीर्वाद भेजे है । दूसरे गाँव जाने में देर होने के बावजूद संतो को विनंती तथा सम्मान करते हुए अन्नकूट आरती उतारने के बाद दूसरे गाँव में गये ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

magazine@swaminarayan.in

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

रेवाभाई भावसार का संकल्प समझिए

भगवान श्री स्वामिनारायण गांधीनगर के पास साबरमती नदी पार करते ही धारा में स्नान विधिकरने के लिए गये । बगल में कपडा रंगने का काम करने वाले रेवाभाई स्नान करते हुए भगवान का दर्शन किए । विचार बदला और मन मे संकल्प आया कि ''ये यदि भगवान है तो मुझे धोती धोने की सेवा दे ।'' अंतर्यामी श्री स्वामिनारायण भगवान संकल्प समझ गये और रेवाभाई को नाम से बुलाकर धोती और खेश दिये । रेवाभाई को ईश्वरत्व का ज्ञान हुआ । जिसका दर्शन श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के हाल नं. ६ में होता है

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अप्रैल-१८

रु. १५,०००/-	दीपेश भीमजी वेकरिया - बलदिया वर्तमान में लंदन - ह. तेजस, रंजन और भावेश वेकरिया।
रु. १५,०००/-	दीपक शांतिलाल शाह - अहमदाबाद
रु. १२,८००/-	गीरीशभाई कनैयालाल पंचाल, ह. रमीलाबेन गीरीशभाई खेमाल - यु.एस.ए.
रु. ११,०००/-	नितिनभाई शाह - अहमदाबाद।
रु. ५,००१/-	श्री धर्मकुल परिवार की सेवा में ५० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में लक्ष्मणभाई जे. चावडा - स्वा. बाग मेमनगर - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि अप्रैल-१८

दि. ०१-०४-२०१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर कार्डीफ इंडिया में प्रवास यात्रा की सफलता के उपलक्ष्य में।
दि. ०४-०४-२०१८	परबतभाई कानजीभाई वरसाणी - ह. प्रेमिला परबत वरसाणी।
दि. ०६-०४-२०१८	(प्रातः) दिपेश कानजी केराई तथा संगीता राबडिया - लंडन (शायं) वनिता मनजी हिराणी - यु.एस.ए.
दि. १५-०४-२०१८	अ.नि. परसोत्तमदास जीवरामभाई पटेल - ह. दिपेशभाई परसोत्तमभाई - लुणावाडा
दि. २२-०४-२०१८	डॉ. हरिकृष्णभाई वशरामभाई पटेल - विसतपुरावाला - बोपल - ह. हरजीभाई ट्रस्टीश्री कालुपुर मंदिर चि. ध्यान के जन्म उपलक्ष्य में
दि. २९-०४-२०१८	भाईलालभाई ईश्वरभाई पटेल - देवपुरावाला - वर्तमान में कडी

अधिक जेठ (पुरुषोत्तम) मास में श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में महापूजा

अपने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में पूरे अधिक जेठ मास में समस्त लोगो को महापूजा का अलौकिक लाभ लेने के लिए सम्पर्क करे : ९९२४४९०५६६

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

समय के साथ सावधान

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

कणोतर गाँव की बात है । (सुरेन्द्रनगर जिला) कणोदर में एक प्रसंग बहुत अच्छा हुआ है । अभी भी प्रसंग की याद अमर बनी हुई है । भक्त वत्सल स्वामिनारायण भगवान काणोदर आये है । वहाँ पर दो भाई हरिभक्त थे । एक का नाम सघराम और दूसरे का नाम शार्दूल था । जाति के रबारी थे । जिसे सभ्य भाषा में हमे देसाई कहते है । श्रीजी महाराज से आग्रह करके अपने घर रुकने के लिए कहा । महाराज आज यही रहिए । महाराज सघराम और शार्दूल के घर पर आये । दोनो भाईयों का घर आस-पास में था । बीच में छोटी दिवाल थी । दोनो भाई अलग रहते ते । व्यवहार से अलग लेकिन मन से एक थे ।

संसार में इतना अवश्य सिखने जैसा है । उम्र और समय के बाद शायद भी अलग रह सकते है । उसमें कोई विरोधनही है । यह एक व्यवहार है लेकिन जब मन से अलग रहे ये अच्छी बात नहीं है । धन से अलग रहे । इतना मैं कमाया मेरा उतना आप कमाये आप का ऐसा करे तो कोई कष्ट नहीं है लेकिन मत भेद होने पर अधिक कठिनाई आती है । सघराम और शार्दूल उनके दो घर बीच में ओसरी और आँगन छोटी दिवाल दोनो भाई अपने घर में रहते थे । और शाम को मिलते थे । आज महाराज कहाँ होगे ? कौन सी लीला करते होगे ? शाम को दोनो भाई बैठकर मनन करते थे ।

स्वामिनारायण भगवान सघराम के घर आये थे । वहाँ पर दूर से संत आये दिखाई दिये । दूर से भगवा रंग का कपड़ा दिखा । श्रीजी महाराज बोले सघराम देखो कोई संत दिख रहा है और ये ब्रह्मानंद स्वामी है । देखो सघराम । ब्रह्मानंद स्वामी यही आ रहे है । और मैं छिप जाता हूँ . और स्वामीजी से कहना नही कि श्रीजी महाराज यहीं पर हैं । महारा ज! स्वामीजी जान गये होगे तो ? नही..... नहीं हम छिप जाते है । श्रीजी महाराज दो भाईयों के घर के बीच ५ फुट की दिवाल कूद कर शार्दूल के घर में चले गये । क्योंकि दरवाजे से जाते तो स्वामी पहचान जाते इस लिए दिवाल कूदकर शार्दूल के घर में गये ।

स्वामिनारायण भगवान ज्योही दिवाल कूदने गये उसी समय प्रभु के चरण में से एक मोजडी सघराम के घर में गिर गयी । सधाराम भक्त जिसे आ शिक्षित माने भी तो एक मुक्त आत्मा थी । मोजडी गिर गई अर्थात् बोला महारा ज! ओ महाराज ! आवाज नहीं करो । दूसरी मोजडी भी ईधर डाल दे तभी स्वामीजी से नहीं कहूँगा । नही तो स्वामीजी को बता देगे ।

स्वामिनारायण भगवान की मोजडी चुराने का उसका ईरादा नहीं था । लेकिन उसे मोजडी में महिमा दिखी । ऐसी दिव्य मोजडी कहाँ मिलेगी कहाँ मिलेगी । हजारो साल की तपस्या पर भी मोजडी नहीं प्राप्त होती है । और महाराजने दिवाल पार करके दूसरी मोजडी फेंक दिये सघराम खुश हो गया कि हमारी भाग्य कैसी है । दोनो मोजडी को लेकर कपडे में बांधकर घर के कोठे पर छिपा दिया ।

श्रीजी महाराज छोटे भाई के घर में छिप गये । और दोनो मोजडी कोठे पर छिपा दिया ।

ब्रह्मानंद स्वामी आये । सघराम । जय स्वामिनारायण आइये - आइये - स्वामी... स्वामी पुकारते है, सघराम । महाराज नहीं आये ? नहीं स्वामी महाराज जी आये होते तो क्या छिपाना । यहाँ पर घोडी बंधी रहती । महाराज नहीं आये है ? सही लग रहा है तुम मेरे सामने झूढ बोल रहे हो । स्वामी और सघराम का यह उद्रेश्य नही था । ब्रह्मानंद स्वभावत, विनोदी स्वभाव के थे । स्वामी बोले ! मेरे सामने झूठ नहीं बोलो, जो झूठ बोलते है उनके होठ कापते है, झूठ बोले उसकी आँख धुमे, सघराम आप कहते हो श्रीजी महाराज यहाँ नहीं है । लेकिन आप के रोम-रोम

में खुशी दिखाई देती है, तुम्हारे आँख में तुम्हारे होठ तुम्हारी आवाज में आनंद झलकता है, यह ज्ञात कराता है कि महाराज यही पर है। बार-बार सघराम कीनजर, छिपाये मोजडी वाली कोठे पर नजर जाती थी। थैली में दो हजार रुपये हो तो, बस में बैठने पर बार-बार हाथ उसी जगह पर जाता है। ज्ञानी जान जाता है। इसमें तो कुछ है। इस सघराम भक्त की नजर बार-बार वही जाती थी। स्वामीने देखा यह बार-बार कोठे पर क्यो देखता है। स्वामी खडे हो गये। इस कोटे पर क्या है? खडे हो जाओ, लेकर आओ, नहीं तो में अनपे हाथ से ले लूँगा। यह सीधा सघरामने मोजडी बता दी।

और स्वामीजी अपने सरोद के तार ठीक किये और सघराम के घर के दिवाल जहाँ से महारजा कूदे थे उसके पास बैठकर और स्वामीजी प्रारम्भ कर दिये –

"माव पडी रही मोजी रे वाला, आवा ते केम
अकलाणा रे, कुंज बिहारी जी................"

हे प्रभु! आज क्यो धबरा गये। मोजडी यही पर रह गयी और आप छिप गये। छिपनां हो तो पहले की निशानी मिटानी पडेगी। ये तो पूर्ण मोजडी छूट गयी है। केवल आप के पद चित्त भी होते तो ढूँढ लेता, ये तो बड़ा सा साक्ष्य है कि आप यहाँ छिपे है। ऐसे क्यो धबराये है। एक पद, सूदरा पद तीसरा पद जब चौथा पद ब्रह्मानंद स्वामी शुरु किये। उसी दिवाल से महाराज पीछे आये तथा स्वामी के पास बैठ गये। बस-बस स्वामी बस, ब्रह्मानंद स्वामी महाराज का दर्शन करके खुश हुआ। श्रीजी महाराज ब्रह्मानंद स्वामी रचित नव कीर्तन सुनकर खुश हुए तथा सधराम भक्त का कार्य पूरा हो गया।

मित्र! इस प्रकार से कणोतर में श्रीजी महाराजने लीला किया था। यह मोजडी आज भी उसके परिवार तथा वंशजो के पास सुरक्षित है। इन सघराम और शार्दूल का घर यात्रा धाम बन गया। हजारो भक्त-संत वहाँ दर्शन करने जाते है।

मित्रो! आप ने देखा, सघराम भक्त को कैसा मौके का लाभ मिला। कैसा अदभूद लाभ प्राप्त हुआ। ऐसी अपने में सच्ची श्रद्धा, लगन हो तो हमें भी लाभ मिल सकता है। अच्छा अवसर प्राप्त करने के लिए स्वार्थी रुप से सावधान रहना चाहिए।

•

महत्व, नियम का है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

कई बार संत की वाणी और सत्संग से काफी अधिक लाभ मिल जाता है। हम लोग अक्सर सुनते है लेकिन ये बात समझ में नहीं आती है। कभी ऐसी बात हो जाती है कि इस बात की सार्थकता समझ में आ जाती है।

बात ऐसी है एक छोटा सा गाँव था। गाँव में कुछ बंगले तथा रोष छोटे-छोटे घरो में अनेक जातियो के लोग रहते ते। ब्राह्मण कर्मकाडं कराते थे। पटेल खेती करते है तथा अनाज बेचते थे। वनिया अनेक प्रकार के व्यापार करते थे। इसी प्रकार प्रजापति लोग अपने खेशानुसार मिट्टी के बर्तन, कढाई, रामपात्र अनेक बर्तन बनाते थए। गाँव में वृद्ध भी थे। युवक भी थे। बच्चे और बहने भी थी। सभी अपने कार्य में व्यस्थ रहते थे।

एक बार इस गाँव में एक महात्मा आये। ये इस गाँव की अच्छी पानी की व्यवस्ता तथा मंदिर की व्यवस्था देखकर खुश हुए तथा रुकने की योजना बना दिये। एक कहावत है कि ''साधु, ब्राह्मण ने भाजी, पाणी से बहुराजी'' ये महात्माजी नदी में स्नान करे। पूजा-पाठ करके कथा-वार्ता उपदेश देते थे। प्रारम्भ में निवृत्त लोग आते थे धीरे-धीरे युवक भी कथा वार्ता में आने लगे। लगभग चार से छः महीने बीत गया। अर्थात् महात्माजी गाँव छोडकर दूसरी जगह जाने के लिये निर्णय किये। कारण –''साधु तो चलता भला''

बिढ़ाई लेते समय इस महात्माने सभी को कोई नियम लेने की बात कही। नियम पूर्वक प्रभु भक्ति करने से उसका फल जल्दी से मिलता है। महात्मा की बात पर विश्वास रखकर सभीने कुछ न कुछ नियम लिये थे। एक समुह में सभी युवक ही थे। मातमाने उनसे भी नियम लेने को कहे। किसी-किसी ने नियम लिया। यहाँ पर एक युवक बोला ये आप का दर्शन, शास्त्र पढ़ना इत्यादि मुझसे

(पेईज नं. २०)

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "परमात्मा के साथ जुडकर रहने से स्थायी रुप से सुख की अनुभूति होती है।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

माया का सुख अनादिकाल से जीव को मिलता आया है। अनादि काल से यह जीव इसका भोग करता है फिर भी ''जीव'' अशांत सुख है नाशवान सुख है । इस संसार में सुख की पूर्णाहुति होती ही नहीं है। जिसके पास सायकिल है उसे कार की आवश्यकता हो जाती है । परिश्रम करके धन बचाकर जिस वस्तु को प्राप्त कर लेते है उसमें से अपना लगाव कम हो जाता है। जब तक नहीं प्राप्त होती है तब तक वही एक वस्तु दिखाई देती है, प्राप्त हो जाने के बाद दूसरी वस्तु की प्राप्ति हेतु विचार आने लगता है। संतोष होता ही नहीं है कोई पूर्णता नही मिलती है। (जब सही ज्ञान होगा तो ही मनुष्य के वृत्ति जगत के सुख से निकलेगा) और दृढ भी होता है कि जो मिला है वह रहेगा की नहीं। चला जायेगा तो क्या ? नाशवान है ? मछली को तालाब में भय लगता है तालाब सूखने वाले जीव समुद्र में हो तो सुख सागर सम है। वह कभी समाप्त नही होता है। यह समझ के रहना है। परंन्तु यह जीव भगवान और माया के बीच है। तथा भगवान की तरफ कम जाता है। ऐसा क्यो होता है ? इसका कारण क्या है ? अल्पज्ञान के कारण जो वस्तु अधिक दिखाई देती है उसके प्रति अधिक लगाव होता है। मनुष्य का स्वभाव है कि जो वस्तु सामने दिखाई देती है उसके प्रति लगाव अधिक होता है और पूर्ण संसार माया का ही है। इस कारण से भगवान के प्रति कम जाता है। और मायावी सुख की परिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग होती है। किसी को भोजन न मिलता हो तो उसे दो रोटी मिल जाये तो अधिक सुख मिलता है । जिसे मात्र रोटी प्राप्त हो उसे पकवान मिल जाया तो सुख अधिक होता है । ये अच्छा भोजन, अच्छा सुनना, अच्छे-अच्छे दृश्य देखना ये सब क्षण भंगुर सुख है। लेकिन ये सब मायावी सुख है उसमें से एक सबसे बड़ा सुख है। कौन ? निद्रावस्था का सुख सबसे बड़ा सुख है वह सभी को प्राप्त है। सुबह उठने पर ऐसा लगता है कि बहुत अच्छी नदी आई थी। याद भी नही आता है कि सुबह कब आ गई। जब कि कई लोगो को ऐसा लगता है कि आधी, रात स्वप्न में चली गयी। जब कभी स्वप्न नही आता है तो तीव्र नींज आ जाती है। तो ऐसा लगता है कि तुरंत सुबह हो यी है। क्योकि इस समय सभी ईंद्रियो निष्क्रिय हो जाती है। सोने में किसी प्रयास के भी सुख मिलता है । इंद्रिया और सभी अवयव निष्क्रिय हो जाते है तो भी जो सुख निद्रा वस्था में मिलता है वह जागने पर नहीं मिलता है। निद्रावस्था में आत्मा परमात्मा के साथ लीन हो जाता है। इस लिए कुछ याद नही रहता है। अपनी आँख खुले अर्थात तुरन्त हम माया के क्षेत्र में प्रवेश कर देते है । इसलिए जो सुख निद्रावस्था में मिलता है वही सुख जागृत अवस्था में लेना हो तो इन्द्रियो को भगवान की आज्ञा में रखने से अर्थात् भगवान के साथ जुड कर रहने से मिलता है । और यह सुख क्षणिक नही होता है । जब कि निद्रावस्था का सुख क्षणिक होता है। जो व्यक्ति इस तरह भगवान से जुड कर रहता है तो उसे जागृत अवस्था में भी स्थायी सुख प्राप्त होता है।

प्रत्येक व्यक्ति तीन प्रकार का सुख भोगते है । ''भुक्ति'' ''भक्ति'' और ''मुक्ति'' अर्थात् इन्द्रियो द्वारा सुख प्राप्त करते है उसे ''जड़'' वस्तु द्वारा प्राप्त सुख कहते है। हमे लगता है कि इंद्रियाँ चेतन है। लेकिन इन्द्रियाँ जड है ? क्यो ? हमारे शरीर में आत्मा होती है। तभी तक कार्य करती है। आत्मा चेतन तत्व है उसकी उपस्थिति में इन्द्रियाँ सक्रिय होकर कार्य करती है। सही में इन्द्रियाँ जड है। आत्मा शरीर कल्याण करती है तब ये निष्क्रिय हो जाती है। और ९९% लोग इन्द्रिय सुख के पीछे लगे रहते है। तो यह जो 'भोग' है

हमका भगवान से दूर करती है।

दूसरा है 'भक्ति' भक्ति अर्थात् स्वार्थ से अपेक्षाबिना, निष्कामभाव से भगवान को खुश करने के लिए कार्य करना वही सच्ची भक्ति कहलाती है। प्राय: लोग 'मायावी' सुख के लिए भक्ति करते है। लेकिन जो भगवान के सच्चे भक्त होते है वे निष्काम भाव से भक्ति करते है क्योकि ? ऐसी निष्काम भक्ति से ही मुक्ति मिलती है।

अब 'मुक्ति' के लिए क्या करना है ? आज हूँ कल रहूँगा कि नही इसके पूर्व जो कार्य है उसे पूर्ण कर लेना चाहिए। कार्य पूर्ण हो जाने पर कोई शिकायत नही आयेगी। यदि रात्रि में शान्ति पूर्वक शयन करना हो तो भी कार्य न करने पर रात में नींद नही आती है। उसी प्रकार अपने जब चिर निद्रा में जाते है तो (शरीर त्याग को चिर निद्रा कहते है) यदि मुक्ति चाहिए तो जो अन्दर भरा है उसे निकालना पडता है यदि ये सभी साथ लेकर चिर निद्रा यें जायेगे तो फिर से जागना पडेगा। अर्थात् पुनः आना पडेगा ? ये वस्तुए पुनः भव सागर मे डूबा देगी। जो लोग संसारी है। अल्पज्ञानी है जिसे ज्ञान ही नही है कि मनुष्य का जन्म किस लिए हुआ है। ऐसे लोग ''मायावी'' सुख के लिए ऐसा सोचते है कि कल नही रहेगे तो ? इस लिए सभी आनन्द उठा ले। परंतु हम सब के उपर कितनी अधिक महाराज की कृपा होगी। और अपना कितना पुण्य इकठ्ठा होगा तो इस भरत खंड मे जन्म हुआ है इसके बाद भी विशेष कृपा यह है कि हम लोगो को ''श्री नरनारायणदेव'' मिले है। अपने जीवन में सच्चे से देखे तो किसी वस्तु की कमी ही नही है। दो समय महाराज भोजन देते है। मंदिर में तीन-चार घंटा शांति से बैठकर भजन करे तो कोई रोकने वाला नही है। इस लिए जागृत अवस्था में भी मन से भगवान के साथ सतत जुडकर रहे और महाराजश्री की आज्ञा से रहकर प्रयत्न करे तो सहजता से 'मुक्ति' भी प्राप्त हो जायेगी।

अनु. पेईज नं. १८ से आगे

नहीं हो सकेगा। महात्माजी बोले जो आप को सरल नियम लगे उसका पालन करना। वह विचार कर महात्मा से नियम लिया कि मेरे सामने एक प्रजापति रहते है उनकी दाढी बहुत लम्बी है। तो मैं यह नियम बनाता हूँ कि उनकी दाढी देखने के बाद ही भोजन करुँगा। क्योंकि वो सामने ही रहते है। इस लिए नियम का पालन हो जायेगा। महात्माजी चले गये।

यह युवक पर आकर अपने नियम को सभी को अवगत किया। और अपने नियम का प्रतिदिन पालन करने लगा।

एक दिन की बात है। प्रजापतिजी को कोई काम रहा होगा मिट्टी खोदने प्रात:, निकल गये। लडका उठकर चारो तरफ देखने के लिए चारो तरफ देखा लेकिन प्रजापति दिखाई नही दिये। देखते-देखते मिट्टी खोदने वाली जगह की तरफ चला गया।

घटना ऐसी घटित हुई वह मिट्टी खोद रहा था। वहाँ पर धडाम की आवाज आई। उसने देखा सोने से भरा घडा था। उसने सोचा कोई देखे नही इस तरह घर ले जायेगे। लेकिन उस युवक को प्रजापति की दाढी दिखाई दे दी। और आवाज करने लगा अरे दिखा दिखा प्रजापति धबरा गया कि उसने सोने का घडा देख लिया है। अर्थात ''दिखी'' इस लिए बोला। अर्थात उसने कहा, अरे भाई। यहां आईए। तुमने भले ही देखा लेकिन किसी से मत करना। अपने दोनो आधा-आधा बाँट लेगे। लडका सोचता रह गया ये क्या है ? लेकिन कुछ कहा नही। वहाँ पर प्रजापतिने सोनेका घडा खोला और जो कुछ भी था आधा भाग बाँट दिया।

मजाक में भी ली गयी प्रतिज्ञा और उसका पालन करने से युवक माला माल हो गया। उसने विचार किया की मैने मजाक में नियम किया तो इतना लाभ मिला। इस तरह सोचकर महात्मा के पास गया तथा विधिवत श्रद्धापूर्वक प्रतिज्ञा लेकर जीवन बिताने लगा।

मित्रो ! स्वामिनारायण भगवान के द्वारा बनाये नियमो का श्रद्धा पूर्वक पालन करेगें तो सदैव सुखी होगे। हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहा है कि - नियम, निश्चय और पक्ष इन तीनो का जीवन मे दृढ होना ही सच्चे सत्संगी के पद को प्राप्त करते है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव आदि देवो को चंदन के बाघा का दर्शन

परब्रह्म परमात्मा ईष्टदेव सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के समय मे संत हरिभक्तो के उपर श्रीहरि खूब खुश होते ते । तब सुंदर-चाँदी के कटोरा में मलयगिरी की शीतल सुगन्धित चंदन-सुखड़ भगवान श्रीहरि के उपर लगाकर पूजन करते है यह परम्परा आज भी बनी हुई है । वैशाख सुद-३ तीज अक्षय तृतीया से लेकर जेठ सुद-१५ तक सुगंधित चंदन से परमकृपालु भरत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेवो को वस्त्रो को पहनाते है वैसे ही सुंदर चंदन का सुंदर लेप लगाते है । जो गर्मी में शीतल प्रदान करता है।

श्रद्धालु हरिभक्त यजमान बनकर आते है तथा अलौकिक सेवा का लाभ लेकर धन्यता अनुभव करते है । श्री नरनारायणदेव के छोटे ब्रह्मचारी संत भगवान को खुश करने के लिए खुब प्रयास करते है । समस्त धर्मकुल परिवार उसके इस सेवा के कार्य से खूब खुश हुए है । इस वर्ष अधिक जेठ महीना होने के कारण अढ़ी महीने तक मास पर्यन्त चंदनके लेप का दर्शन होगा । दूर रहने वाले हरिभक्त एकबार तो अवश्य चंदन के लेप का दर्शन अवश्य करे तथा लाभ प्राप्त करें ।(कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी - कालुपुर)

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर (हवेली में) प्रथम बालिका शिबिर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा एवम् आशीर्वाद से ता. १९-४-१८ के दिन कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिव्य शिबिर का आयोजन किया गया था । इस शिबिर में ३०० से अधिक कन्याओ ने भाग लिया था । अपने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. राजाजी आकर बच्चियों के उत्साह को बढ़ाये थे । बाद में सबको प.पू. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद दिया । बच्चियो को प्रोत्साहित करके खुश हुए थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा का ५५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा का ५५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. केशाभाई पटेल परिवार ने यजमान पद पर धामधूम से मनाया । इस अवसर पर गाँधीनगर से-२ मंदिर से महंत शा. पी.पी. स्वामी और बालस्वरुप स्वामी आदि संत मंडल के साथ आकर कथा वार्ता किये । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके लाभ दिये ।

आगामी तीन पाटोत्सव के यजमान का पंजीकरण सभा में ही हो गया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने प्रेरणारुप सेवा प्रदान की थी ।(धवल पटेल - चाँदखेडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा में श्री हनुमान जयंती

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा में चैत्र सुद-१५ ता. ३१-३-१८ को शनिवार श्री हनुमान जयंती के पवित्र दिन पर सद्‌गुरु महानुभावानंद स्वामी आये थे । श्री कष्टभंजनदेव को सोना की सिकड प्रदान की गई थी । इसके यजमान पद पर जिसके हृदय में संकल्प हुआ था । ऐसे प.भ. चौधरी रवि गोवाभाई जोईताभाई (आस्ट्रेलिया) में रहे थे ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्री हनुमान चालीसा का पाठ श्री भक्त चिंतामणी १४२ वें पाठका पठन एवम् आरती उतारे थे । अंत में मंदिर के कोठारी प.भ. श्री जीवणभाई चौधरी यजमान परिवार को माला और पुस्तक की भेट देकर सम्मान किये थे । अंत में सभीने दादा की सुखडी का प्रसाद लेकर सभी लोग धन्य धन्य हुए ।(कोठारी चौधरी जीवणभाई)

वाली (राजस्थान) में बहनो की श्री स्वामिनारायण मंदिर का शिलान्यास

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् अ.नि. स.गु. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (वाली) के समस्त संत मंडल की प्रेरणा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश अन्तर्गत गादी राजस्थान प्रदेश में सर्व प्रथम ता. १०-४-१८ मंगलवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर विधिवत भूमि पूजन किया गया था । तत्पश्चात मंदिर में विराजति महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारे सभा में उपस्थित वाली को सभी हरिभक्तो को प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये । इस मंदिर के लिए चौधरी डुंगराजी बूमाजी भूरिया परिवार ने भूमि अर्पण किये थे । वाली मंदिर के सभी संत मंडल ने अच्छा आयोजन किये थे । इस अवसर पर श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल (वाली) वर्तमान मुम्बई की सेवा सुंदर थी । (शा. प्रेमप्रकाशदास - हिंम्मतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लुनावाणा कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा (छपैयाधाम) ता. ४-४-१८ से ता. १-४-१८ तक स.गु. शा. स्वा. माधवप्रियदासजीने वक्ता पद से श्रीमद् भक्तचिंतामणी महाग्रंथ की पाँच दिन की कथा पूर्ण हुई थी । इस अवसर पर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । उनके शुभ हाथो द्वारा निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती और सभा में आकर सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये । श्रीजीस्वरुप स्वामीने सुंदर आयोजन किये थे । सभा का संचालन स.गु. शा. नारायणमुनिने सुंदर रुप से किया था । गाँव के सभी हरिभक्तोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के चरण का स्पर्श और दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये । (छपैयाधाम मंदिर - लुणावाडा)

श्रीहरि प्रसादीभूत मोटप श्री स्वामिनारायण मंदिर का १०५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एवम् मेहसाणा मंदिर के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित तीर्थोत्तम मोटप गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का १०५ वाँ वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

ता. २३-४-२०१८ के दिन अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मोटप गाँव आये थे । और यहाँ पर स.गु.मू.अ.मू. गोपालानंद स्वामी के द्वारा पूजित १५५ वर्ष पहले मुक्तराज तुलसी पटेल के प्रसादी के मक्खनिया लालजी महाराज दिये थे । उस प्रसादी का लालजी महाराज का पंचामृत महाभिषेक षोडशोपचार प.पू. महाराजश्री के कर कमलो द्वारा विधिवत रुप से सम्पन्न हुआ । जिसका दर्शन करके मोटप गाँव के लोग धन्य हो गये ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में ता. १२-४-१८ से १६-४-१८ तक १०५ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंडधुन सभी हरिभक्तोने किया था । और ता. १८-४-१८ से २२-४-१८ के बीच रात्रि में दो घंटे अलग अलग विद्वान संतो के मुख से हरिचरित्रामृत कथा का सुंदर आयोजन किये थे । गाँव के सभी हरिभक्तोने तन, मन और धन से सेवा देकर श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये ।(जी.के. पटेल मोटप - कालुपुर मंदिर के पूर्व ट्रस्टीश्री)

उत्तर प्रदेश में निर्भटयपट्टी (जि. प्रतापगढ) मंदिर में श्रीहरि की प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ऐसे ही समस्त धर्मकुल के विशेष आशीर्वाद से उसी प्रकार अपने भुज (कच्छ) मंदिर के अ.नि. पू. स.गु. महंत स्वामी हरिस्वरुपदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा अ.नि. स.गु. स्वामी वामनप्रसाददासजी (प्रयाग मंदिर के महंत स्वामीश्री के दादा गुरु) दिव्य आशीर्वाद से प्रयागराज मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन में प्रयाग से ७० कि.मी. दूर प्रतापगढ जिले में छपैया जैसे छोटे निर्भय पट्टी गाँव में खूब सुंदर रमणीय दैदिप्यमान नया भव्य श्री

नरनारायणदेव देश के अधिकार के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माणकार्य पूरा होते ही ता. १६-४-१८ से ता. २०-४-१८ तक मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव धामधूमपूर्वक मनाया गया।

महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत दश स्कंधपचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. भक्तिकिशोरदासजी (सावदा) वक्ता पद पर हिन्दी भाषा में श्रोतागण को सुंदर कथा का अमृतपान कराया।

कथा के यजमान पद पर श्री विनोद मिश्रा, श्री तुलसी दूबे और श्री आलोक मिश्रा परिवार ने लाभ लिया।

इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली, भुज, वडताल, गढपुर अयोध्या आदि धामो से संत आये थे। पूरी सभा का संचालन शा. स्वा. हरिगुणदासजी (उमरेठ) शोभा बढाये थे। अन्य सेवा में शा. स्वा. धर्मप्रसाददासजी (वडताल) के संत मंडल ने प्रेरणादायक सेवा प्रदान किये थे।

पूरे मदिर के मुख्य दाता भुज कच्छ श्री स्वामिनारायण मंदिर के अ.नि. स.गु. महंत पुराणी स्वामी श्रीहरिस्वरुपदासजी के कृपा पात्र एक हरिभक्त थे। मुख्य सिंहासन तथा विष्णुयज्ञ के यजमान प.भ. बलदेवभाई सोमाभाई पटेल (अमेरिका) तथा श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान प.भ. हालाई नारण भीमजी (यु.के.), श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के यजमान प.भ. जगदीशभई भीमजीभाई हालाई (यु.के.), श्री गणपतिजी के मूर्ति यजमान प.भ. कानजी के. केराई (यु.के.), श्री हनुमानजी तथा जमीन दाता श्री गणपति शुक्ला परिवार (निर्भयपट्टी) कलश के यजमान शकुबेन जगदीश वाघेला, भंडारे के यजमान दिपकभाई सी. के. पटेल परिवार, अन्य सेवा में श्री रतिलालभाई खीमजीभाई पटेल (मेडा), श्री प्रविणभाई मंगलदास परिवार तथा जतीनभाई अमृतभाई पटेल परिवार आदि हरिभक्तोने अलौकिक लाभ लेकर श्रीहरि और धर्मवंशी की कृपा प्राप्त किये।

श्री विष्णुयाग, समूह महापूजा, समूह यज्ञोपवीत, श्री ठाकुरजी की नगरयात्रा, रासोत्सव, छप्पनभोग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भंडारा, ब्राह्मण भोजन और आतिशबाजी जैसे उत्सव परम्परागत रुप से मनाये गये।

ता. १६-४-१८ के दिन मंदिर से पोथीयात्रा धामधूम पूर्वक भजन-कीर्तन करते हुए यजमान परिवार के साथ कथा स्थल व्यास पीठ पर रखी गई थी। तत्पश्चात महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी और सिसल्स और यु.के. के यजमानश्री तथा संतो के शुभ हाथो से दीप प्रज्वलन किया गया।

ता. १८-४-१८ वैशाख सुद-३ अक्षय तृतीया के शुभ दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे धामधूम पूर्वक पूर्ण की गयी।

इसके बाद सभा में यजमान परिवार द्वारा प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे तथा आशीर्वाद प्राप्त किये। यजमान परिवार और समस्त सभा और महंत स्वामीने प.पू. आचार्य महाराजश्री अधिक खुश होकर आशीर्वाद प्रदान किये। तत्पश्चात अन्नकूटकी आरती उतारकर सभी लोग अलौकिक सुख की प्राप्ति की। (कमलेश भगत - प्रयागराज मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क (नया नरोडा) मंदिर का दोदशकीय महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और गांधीनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से सत्संग समाज के आयौजन से कथा के यजमान प.भ. भाविनभाई दुर्लभभाई सावलिया, पाटोत्स वके यजमान प.भ. रमणीकभाई भीखाभाई सरधारा उसी प्रकार अन्य छोटी सेवा देने वाले यशस्वी यजमानो के सहयोग से ता. १४-४-१८ से २२-४-१८ तक द्विदशकीय महोत्सव खूब धामधूम से मनाया गया।

सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान वक्ता स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से मधुर संगीत की आवाज के साथ श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्रिय पारायण, श्री नरनारायणधेव बाल मंडल द्वारा सुंदर संस्कार प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवम् वक्तव्य एक घंटे की स्वामिनारायण महामंत्र की धुन, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट अंत में भोजन महाप्रसाद, प्रसंगोचित सभा, उसी प्रकार सामाजिक सेवा के रुप में थैलेसेमिया के रोगियो के

लाभ हेतु रक्तदान (२५ ब्लड बैग एकत्र हुआ) इत्यादि कार्यक्रम पूर्ण हुए । कथा के साथ पोथीयात्रा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के साथ रास और रुक्मणी विवाह जिसमें विवाह का वरघोडा पर ठाकुरजी की यात्रा हर्षोल्लास से मनायी गई थी।

इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री कथा श्रवण हेतु आकर बहनो को दर्शन पूजन का दिव्य सुख दिये । कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजीने कथा पूर्णाहुति कराके आशीर्वाद दिये तथा अनेक धामो से आये ब्रह्मनिष्ठ संतोने अपने अमृतवाणी का लाभ दिये । शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (कालुपुर)ने सभा संचालन तथा नरनारायणदेव युवक मंडल ने समयानुसार सेवा देकर समस्त उत्सव का शोभा बढ़ाये।

प्रत्येक वर्ष इस मंदिर का नरनारायणदेव का धर्मादा अधितम् (औसत ६० लाख जैसा) प्राप्त होता है। जो सत्संग समाज के लिए प्रेरणादायक है । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर खाखचेरी मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

मूली निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मच्छु के किनारे खाखचेरी गाँव की बहनो का मंदिर जीर्ण होने पर जीर्णोध्धार कराया तथा पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से पूर्ण हुई । इस उत्सव के उपलक्ष्य में ता. ९-४-१८ से ता. १३-४-१८ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक पारायण पुराणी स्वामी धर्मजीवनदासजी (मोरबी) और पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर) वक्ता पद पर पूर्ण हुई । अन्य कार्यक्रमो में श्रीहरियज्ञ, अन्नकूट, रात्रि कालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए थे। बहनो के प्रेम भेर आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री भी आये थे । सभी बहनो को दर्शन आशीर्वाद देकर खुश हुए । धामोधाम से संत, सांख्ययोगी बहने और हरिभक्त अधिक संख्या में आये थे। सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा स.गु. स्वामी हरिभक्तदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा हुआ था। ऐसे सुंदर सत्संग के द्वारा प्रचार माध्यम से मच्छू के किनारे सत्संग में जागृति आती है। अन्य सेवा में स.गु. वृंदावन स्वामी आदि संत मंडल जुडे थे।(झाला शैलेन्द्रसिंह)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन (अमेरिका) में १८ वाँ वार्षिकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ पर ह्यूस्टन मंदिर में सेवा-पूजा करने वाले नीलकंठ स्वामीकी प्रेरणा से अपने सुगरलैण्ड ह्यूस्टन श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर में १८ वाँ वार्षिकोत्सव १२ मार्च फाल्गुन वद-१० को शायं ५ से ८ के बीच सभी हरिभक्तोने मिलकर उत्साहपूर्वक मनाया था। सर्व प्रथम मंदिर के सभा मंडप में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून कीर्तन युवा भक्तो द्वारा किया गया ठाकुरजी का सोलह श्रृंगार अभिषेक भूदेव श्री नितीनभाई शुक्ल द्वारा संस्कृत श्लोक के सुंदर गान से तथा संतो द्वारा वेदोक्त विधिसे सम्पन्न हुई । यजमान परिवार ने पूजन विधिमें सुंदर लाभ लिया । तत्पश्चात यजमान के साथ और महानुभावो ने भी लाभ लिया । प्रासंगिक सभा में अठ्ठारवर्ष के भीतर हुए संस्मरणो को बताया। यजमानो के साथ छोटी-बडी सेवा देने वाले लोग सम्मानित हुए । सभी भक्तो के घर से तैयार सुंदर सामग्री अन्नकूट के रुप में ठाकुरजी को रखा गया था। अन्त में शयन आरती, नित्य निमय, आदि करके सभी लोग धन्य हुए।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका) श्री रामनमवी-श्रीहरि प्रगटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पार्षद भरत भगत की प्रेरणा से अमेरिका में अपने सेन्ट्रल न्यूजर्सी कोलोनिया हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री रामनवमी और श्रीहरि प्रगटोत्सव धामधूम से मनाकर आरती उतारी गयी। दोपहर

१२-०० बजे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्रजी का प्रगटोत्सव मनाया गया । यजमान परिवार तता अन्य सेवा भावी भक्तोने आरती का सुंदर लाभ लिया । भरत भगतने कथा में भगवान के प्रगटोत्सव का महात्म समझाये । रात्रि में १० बजकर १० मिनट पर सर्वोपरि भगवान श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज का प्रगटोत्सव की आरती धामधूम से की गई । भजन-कीर्तन करके भगवान को झूले में झूलाया गया, रास गरबा नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गाया गया ।

श्री हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में हनुमानजी का पूजन अर्चन करके आरती उतारी गयी । यजमानो का सन्मान करके प्रसाद लेकर सभी लोग धन्य हुए ।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) श्री रामनवमी-श्रीहरि जयंति कथा पारायण और हनुमान जयंती

सर्वावतारी श्री इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. २५-३-१८ रविवार के दिन श्री रामनमवी श्रीहरि प्रगटोत्सव के शुभ दिन पर अपने लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रात: १० से १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्रजी का जन्मोत्सव और शायं ६ से ८ बजे सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रगटोत्सव उसी प्रकार श्रीहरिकृष्ण महाराज का प्रचलन अनुसार षोडशोपचार अभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । जिस में यजमान परिवार भी आया था ।

श्रीजी स्वामीजीने जन्मोत्सव के कीर्तन पद और श्रीहरि प्रगटोत्सव की कथा सुनाये थे । सुंदर रास गरबा के बाद ठाकुरजी के लिए बहनो द्वारा बनाया गया फरहार का प्रसाद सबको दिया गया । यजमान परिवार का सुंदर सम्मान किया गया ।

ता. २६-३-१८ से ता. ३०-३-१८ तक श्रीजी स्वामी वक्ता पद से श्रीमद् सत्संगीभूषण पंचान्ह पारायण का सुंदर आयोजन किये थे । जिस में कई हरिभक्त अनेक सेवा के यजमान बने थे ।

पूर्णाहुति के दिन यजमान परिवार के सन्मान पश्चात सभी ने प्रसाद रुप भोजन ग्रहण किये ।

ता. ३१-३-१८ शनिवार को श्री हनुमान जयंती के दिन अपने मंदिर में सायं को श्री हनुमानजीका प्रगटोत्सव उत्साह से मनाया गया । जिस में श्री हरिभक्त यजमान तथा सह यजमान बनकर लाभ लिये तथा धन्य हुए .

प्रत्येक अवसर में हरिभक्तोने बड़ी संख्या में दर्शन किये तथा कृतार्थ हुए ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग अच्छा हुआ ।(सहमंत्री किरण भावसार - लेस्टर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलैण्ड (न्यूजीलैण्ड)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के प्रेरणा से चैत्र वद-१ एकम् ता. १-४-१८ के दिन अपने ऑकलैण्ड मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का ''दशाब्दी पाटोत्सव'' भव्यता से मनाया गया ।

इस अवसर के उपलभ्य में अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ आये थे । जिस में स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा), शा.स्वा. रामकृष्णदाजी (कोटेश्वर), शा.स्वा. गोलोकविहारीदासजी (बद्रीनाथ मंदिर) और हजुरी पार्षद वनराज भगत आदि आये थे । हरिभक्तो द्वारा प.पू. महाराजश्री का सुंदर स्वागत और पूजन किया गया था । संतो-पार्षदो की भी पूजा की गई थी ।

दूसरे दिन श्री हनुमान जयंती के दिन श्री हनुमान चरित्र की कथा बाद प.पू.आचार्य महाराजश्रीने श्री हनुमानजी की पूजा आरती किये ।

तीसरे दिन प्रात ऑकलैण्ड मंदिर में बिराजमान देवो को केसर जलाभिषेक, आरती और अन्नकूट की आरती हुई । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने पूरी सभा को आशीर्वाद दिया । प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल प्रत्येक हरिभक्तो का सेवा हेतु आभार व्यक्त किये । इस अवसर के यजमान श्री सुरेशभाई अमीन परिवार तथा श्री अतुलभाई पटेल परिवार आदि हरिभक्तोने सेवा दिया ।

विशेषकर अपने मंदिर के पास स्वामिनारायण कम्प्यूनीटी सेन्टर हाल बनाने का संकल्प था । प.भ. डॉ.

कांतिभाई पटेल और सभी हरिभक्तो के साथ भूमिपूजन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत पूर्ण हुआ ।

आकलैण्ड के पास नये चैप्टर हेमील्टन शहर में अपने धर्मकुल आश्रित हरिभक्तो द्वारा प्रत्येक शनिवार को सभा होती है । जिस सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री आये थे और खुब खुश होकर आशीर्वाद दिये थे ।(तुषार शास्त्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने शिकागो स्वामिनारायण मंदिर में अपने उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया जाता है ।

श्री नरनारायणदेव की जयंती आरती, श्री रामनवमी दोपहर १२ बजे जन्मोत्सव की आरती श्रीहरि प्रगटोत्सव आरती रात में १० बजे धाम-धूम से मनायी गयी थी । हजारो हरिभक्त प्रगटोत्सव का दर्शन करके कुतार्थ हुए ।

श्री हनुमान जयंती की समूह महापूजा रखी गयी थी । श्री हनुमानजी के सामने पूजा विधिमें अनेक प्रकार के फल चढाये गये थे ।

चैत्र वद-३ को प.पू. बड़े महाराजश्री का प्रागटोत्सव के शुभ दिन पर सभी लोग ठाकुरजी के सामने महामंत्र धून-भजन कीर्तन आदि विशेष रुप से करके प्रगटोत्सव मनाये श्रीहरि से उन्होने सुंदर और दीर्धायु के लिए प्रार्थना किये थे । अपने मंदिर में ''श्रीहरि स्मृति'' सप्ताह पारायण शा.स्वा. भक्तिनंदनदसाजी वक्ता पद से कहे थे कथा में भगवान की सर्वोपरि महात्म, नियम, निश्चय और पक्ष के प्रति मक्कम होना समझाया गया था ।

बीते वर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा सानिध्य से श्रीहरिकृष्ण महाराज, राधाकृष्ण देव को स्वर्ण अलंकार हरिभक्तो द्वारा अर्पण किया गया । सभी सुवर्ण रत्न जडित मुकुट गाजे-बाजे के साथ धामधूम से अर्पण कियाग या । शा. यज्ञप्रकाश स्वामीने (महंतश्री) अपने गुरु परम्परा में प्राप्त प्रसादी की चाखडी मंदिर को भेट प्रदान किये । (वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

अक्षरवास

लालोडा (इडर देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के वयोवृध्ध, ज्ञानवृध्धसंत पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री घनश्यामजीवनदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिवल्लभदासजी ता. २६-४-२०१८ वैशाख सुद-११ एकादशी को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए लालोडा गाँव में अक्षर निवासी हुए है । उनके अक्षरवास से श्री नरनारायणदेव देश में एक संत की बड़ी कमी हुई है । श्रीहरि उन्हे निज सेवा का सुख दे ऐसी प्रार्थना है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के स.गु. स्वामी नीरकंठदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ता. ५-४-२०१८ दिन गुरुवार को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अक्षरवास

अपने श्री देवेन्द्रप्रसादजी केलवणी ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सहजानंद आर्टस एन्ड कार्मस कालेज के प्रारम्भिक प्रिन्सीपल के रुप में प.भ. डॉ. सी. के. शास्त्रीजी की वर्षो तक कालेज का सुंदर संचालनक रके समग्र गुजरात में अपनी कालेज के शिक्षण क्षेत्र, खेल-कूद के क्षेत्र में अनुशासन में आगे लाये । ये संस्कृत भाषा के प्रकांड ज्ञाती थे । प.पू.ध.धु. आचारथ्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने आप को श्री स्वामिनारायण मासिक के सम्पादक रुप में सेवा १९६८ मे दी थी । २५ वर्ष तक हमेशा सम्पादक के रुप में अपने विद्वता का परिचय दिये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का खूब कृपाथी । वर्तमान में अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री को संस्कृत भाषा पढा ये थे । ऐसे प.भ. डॉ. शास्त्री साहब ता. २२-४-२०१८ के दिन शिकागो में ९१ वर्ष की उम्र में श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

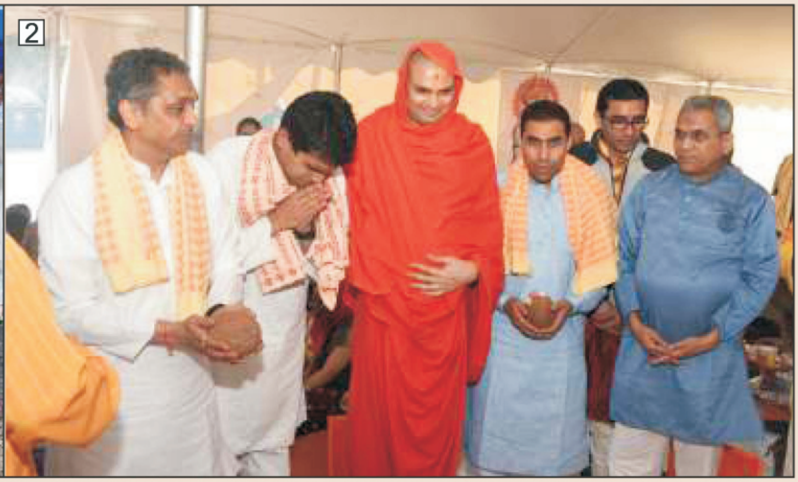

(१) ऑकलैण्ड न्युजीलैण्ड मंदिर के कम्यूनिटी हाल का शिलान्यास करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) सिनेमीन्सन (न्यूजर्सी) मंदिर में मारुति यज्ञ का लाभ लेते यजमान परिवार। (३) महेसाना मंदिर में ठाकोरजी का चंदन ऋंगार का दर्शन। (४) हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर वार्षिकोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते संत लोग। (५) कर्मशक्ति (बापुनगर) मंदिर के वार्षिकोत्सव अवसर पर कथा पारायण का दर्शन। (६) शिकागो मंदिर में उत्सव दर्शन।

Shree Swaminarayan Temple
Kalupur, Ahmedabad

Follow Us On
/nndkalupurmandir

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

सार्वजनिक सूचना

एतद द्वारा देश–विदेश के हरि भक्तो को सूचित किया जाता है कि, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के न्यासी मंडल तथा प्रबन्धकीय कार्यालय को ज्ञात हुआ है कि, सम्प्रदाय के अनुयायी रुप में कुछ व्यक्ति अपनी पहचान संस्था के व्यवस्थापक तथा श्री नरनारायणदेव देश के साधु रुप में देकर संस्था का कोई कार्य हो या जमीन खरीदना है इस प्रकार की गलत बात फैला कर अन्य व्यक्ति के साथ एवम् संस्था के साथ कौभांड करने की रचना करते है ऐसी जानकारी प्राप्त हुई है। इसी प्रकार संस्था के न्यासी मंडल से बिना अनुमति के संस्था के नाम से बिन अधिकृत व्यवहार जमीन मालिको द्वारा आचार्य महाराजश्री, न्यासियो तथा कारभारी कार्यालय में शिकायत आई है। इसके बाद भी संस्था के नाम पर कभी कभार सरकारश्री के सामने संस्था को जमीन लेना है बेचना है ऐसी मांग वाले आवेदन संस्था के ध्यान पर आया है। इस तरह सम्पूर्ण नरनारायणदेव देश गाम हरिभक्तो तथा हरिमंदिरो के कोठारियो को जानकारी दी जाती है कि संस्था के नाम से सम्पत्ति का गैर कायदेसर व्यवहार की सूचना ट्रस्टी मंडल तथा कार्यकारिणी को सूचित करें। संस्था के नाम पर ऐसे कर्म करने वाले व्यक्तियों के उपर संस्था द्वारा फौजदारी दर्ज की गयी है। भविष्य में संस्था के नाम से इस प्रकार का कोई कार्य न किया जाय इस विषय पर सार्वजनिक चेतावनी दी जाती है।

ली.

आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर

अहमदाबाद देश – कारभारीश्री

Praful Kharsani